दूध की बोतल को उबालने से पहले सोचें

बच्चों के लिए दूध की बोतलें उपयोग करने वालों को आम तौर पर यह सलाह दी जाती है कि वे हर बार उपयोग के बाद उन्हें उबाल लें ताकि रोगाणु नष्ट हो जाएं। अब एक तथ्य प्रकाश में आया है जिससे लगता है कि यह सलाह आधी-अधूरी है।

आम लोगों के लिए तो प्लास्टिक मतलब प्लास्टिक। मगर तकनीकी रूप से प्लास्टिक कई प्रकार के होते हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि प्लास्टिक बनाने में किन मूल पदार्थों का उपयोग किया गया है। सिनसिनैटी विश्वविद्यालय के स्कॉट बेल्वर और उनके सहयोगियों ने पाया है कि यदि बोतल पोलीकार्बोनेट प्लास्टिक से बनी है तो उसे उबालने के बाद उसमें से अन्य प्लास्टिक बोतलों की अपेक्षा 55 गुना अधिक बिसफीनॉल-ए (बीपीए) निकलता है। बीपीए वह रसायन है जो खाद्य पदार्थों के कई डिब्बों में पाया जाता है और इसका सम्बंध स्तन व प्रोस्टेट कैंसर से देखा गया है।

दूध की बोतलों के अलावा अन्य ऐसे डिब्बों का उपयोग भी बार-बार किया जाता है। इसलिए बेल्वर और उनके सहकर्मी यह देखना चाहते थे कि क्या बार-बार उपयोग करने पर इन बोतलों व डिब्बों में से ज़्यादा मात्रा में बीपीए निकलता है। इसकी जांच के लिए उन्होंने पोलीकार्बोनेट प्लास्टिक से बनी कुछ बोतलें लीं - इनमें कुछ एकदम नई थीं जबकि कुछ थोड़ी पुरानी थीं। इन सबमें पानी भरकर रखा गया और एक सप्ताह बाद उस पानी में बीपीए की मात्रा नापी गई। देखा गया कि सारी बोतलों में प्रति घण्टे 0.49 नैनोग्राम बीपीए निकलता रहता है।

मगर जब शोधकर्ताओं ने इन्हीं बोतलों में उबलता पानी भरकर रखा तो देखा गया कि बीपीए निकलने की औसत दर 18.67 नैनोग्राम प्रति घंटे रही। और गौरतलब बात यह रही कि बोतलें ठंडी होने के बाद और उन्हें धो लिए जाने के बाद भी बीपीए की अधिक मात्रा निकलना जारी रहा।

बेल्वर व साथियों का कहना है कि वैसे तो यह मात्रा भी सरकारी तौर पर स्वीकार्य मात्रा से कम है मगर सावधानी की ज़रूरत स्पष्ट है। खास तौर से बच्चों की दूध की बोतलों के बारे में तो अतिरिक्त सावधानी की ज़रूरत है क्योंकि इनका उपयोग तो सैकड़ों बार होता है। बेल्वर का सुझाव तो यह है कि दूध की बोतलों में पोलीकार्बोनेट प्लास्टिक का उपयोग बंद ही कर दिया जाना चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***